

इंदिरा दांगी की कहानियों में सामाजिक चेतना

शिवानी सोनी

(शोधार्थी, हिंदी विभाग)

इ. गाँ. रा. ज.जा. वि.वि. अमरकंटक (म.प्र.)

Email id- sonishivani096@gmail.com

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह

(आचार्य, हिंदी विभाग)

इ. गाँ. रा. ज.जा. वि.वि. अमरकंटक (म.प्र.)

Email id- drjksinghhindi@gmail.com

Received- 20 August - 2026

Accepted- 21 August - 2026

Published- 30 September-2026

Corresponding Author-

शिवानी सोनी

(शोधार्थी, हिंदी विभाग)

इ. गाँ. रा. ज.जा. वि.वि. अमरकंटक (म.प्र.)

Email id- sonishivani096@gmail.com

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041506>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

© 2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है तब निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।” उपर्युक्त कथन से यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग की सामाजिकता को व्यक्त करता है। सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति साहित्य में अनिवार्य मानी जाती है। चूँकि साहित्य का मुख्य लक्ष्य समाज का कल्याण करना है। सामाजिक चेतना से संबंधित कहानियों में समाज के विभिन्न अंगों जैसे परिवार, संस्कृति, आर्थिक विषमता, राजनीति आदि का चित्रण रहता है। इंदिरा दांगी समाज में होने वाली घटित घटनाओं को सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सन्दर्भों से जोड़कर देखती हैं। उनकी कहानियाँ समाज में सड़ी-गली रुढ़ियों पर सीधा प्रहार करती हैं और एक स्वस्थ समाज के निर्माण की वकालत करती हैं।

इंदिरा दांगी के कहानी संग्रह ‘बारहसिंघा का भूत’, ‘एक सौ पचास प्रेमिकाएँ’, ‘शुक्रिया इमरान साहब’ हैं। इनकी प्रथम कहानी ‘लीप सेकेंड’ है। इन कहानी संग्रहों में अनेक छोटी-छोटी कहानियाँ हैं, जिसमें माध्यम से उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच पिस्टे मानव मूल्य, आम-आदमी के जीवन की समस्याओं, मध्यवर्गीय परिवार की परेशानियों, स्त्री-पुरुष संबंधों एवं समाज में नारी की स्थिति, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों आदि सामाजिक विसंगतियों का चित्रण किया है।

“हिंदी कहानी के लगभग आधी शताब्दी के विकास ने भी उतनी महिला कथाकारों को उत्पन्न नहीं किया, जितनी लेखिकाएँ-कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी और उषा प्रियंवदा, आदि- अकेले इस दौर में सामने आईं। निःसन्देह समाज में स्त्री की बदलती हुई स्थिति के

शोध सार- हिंदी जगत की समकालीन लेखिका इंदिरा दांगी का लेखन विभिन्न विषयों को अपने अलग-अलग तरीके से पेश करता है। इंदिरा दांगी वर्तमान हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण आवाज हैं जो अपनी सशक्त लेखन शैली और सामाजिक मुद्दों पर गहरी पकड़ के लिए जानी जाती हैं। इनकी कहानियों में दहेज प्रथा, नारी जीवन की विषमताओं, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, आर्थिक विपन्नता देखने को मिलती है। इन्होंने समाज की विभिन्न समस्याओं को अपने लेखन का विषय बनाकर साहित्य सृजन किया है। समकालीन लेखिका इंदिरा दांगी की समस्त कहानियों में सामाजिक चेतना प्रतिबिंबित होती है। इनकी कहानियाँ समाज के यथार्थ का सजीव चित्रण करती हैं। साहित्यकार किसी न किसी रूप में मनुष्य के जीवन में घटित घटनाओं, विडंबनाओं और उनकी समस्याओं का चित्रण अपनी रचनाओं के माध्यम से करता है। समकालीन कहानी की सबसे बड़ी विशेषता अपने परिवेश से गहराईयों से जुड़ना है। आज का रचनाकार उन समस्याओं से सीधा जुड़ा हुआ स्वयं अपने को उन परिस्थितियों के बीच खड़ा पाता है।

बीज शब्द- आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, यौन शोषण, भ्रष्टाचार, मध्यवर्ग, पर्यावरण।

मूल शोध- इंदिरा दांगी ने अपनी कहानियों के जरिए सामाजिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। साहित्य तथा समाज अलग नहीं है, दोनों ही एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। साहित्य तथा समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य में जो कुछ भी लिखा जाता है वह कहीं न कहीं समाज में घटित घटनाएँ ही हैं। जो कुछ भी समाज में घटित होता है उसका पूर्ण रूप से साहित्य में प्रभाव पड़ता है, उसका जीता जागता स्वरूप हमें साहित्य में पाते हैं। साहित्य के माध्यम से समाज में स्थित बुराइयों व विद्रूपताओं को चित्रित किया जाता है। रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार “जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ

कारण ही यह संभव हो सका। इन लेखिकाओं ने अपनी दृष्टि से अपने जीवन को देखा और कदाचित पहली बार हिंदी में स्त्रियों के जीवन और उसकी समस्याओं को प्रमाणिक और विश्वसनीय अभिव्यक्ति मिल सकी। ” इंदिरा दांगी के कहानियों में स्त्री पारंपरिक बेड़ियों को तोड़कर आगे बढ़ने का हौसला रखती हैं। वे स्त्री को केवल पीड़िता के रूप में नहीं दिखाती, बल्कि उसे एक स्वायत्त निर्णय लेनेवाली और संघर्षशील इकाई के रूप में प्रस्तुत करती हैं। ‘योग्य वधु’ कहानी में एक स्त्री के मन में चल रहे द्वन्द को दिखाया गया है। स्त्री खुद की अस्मिता की खोज कर रही है। इस कहानी में सुहानी को लड़के वाले देखने आते हैं। उसके पिता उसे ब्यूटी पार्लर से तैयार होकर आने को कहते हैं। तब सुहानी का मन व्यग्र हो उठता है कि लड़के वालों के सामने वह वैसी क्यों नहीं जा सकती जैसे वह वास्तविकता में है। वह सोचती है कि उसके व्यक्तित्व में कमी क्या है? सुहानी के द्वारा स्त्री के मन में चल रहे स्वयं की खोज को दिखाया गया है। इस कथन से उद्धृत होता है “लड़कियाँ सदैव यही तो करती हैं। अपना स्वाभिमान दबाकर आज्ञाओं का पालन करने की आदत इन संस्कारों के मूल में है जिन्हें बचपन से ही लड़कियों के दिलोदिमाग में ठूस-ठूसकर भरा जाता है और त्रासदी यह है कि इस गुलाम मानसिकता को स्त्री सुलभ संस्कार कहा जाता है। ”

‘बाउजी की बहुत इज्जत है’ कहानी में अकेलापन और अजनबीपन की समस्या को दिखाया गया है। समाज में अकेलापन और अजनबीपन का चलन देखने को मिलता है। रिटायर्ड पुलिस इंस्पेक्टर ओमप्रकाश के इस कथन के माध्यम से देखा जा सकता है- “हवा ही ऐसी चल रही है पहले ज़माने में पड़ोसी ही सबसे सगा रिश्तेदार होता था और अब अखबार में किता छपता है कि अपने घर में भखा, अकेला मर गया और लोगों को इते दिनों बाद पता चलता है।” उपर्युक्त सन्दर्भ के आधार पर यह देखा जा सकता है कि आधुनिक समय में लोग एक-दूसरे से कटे हुए रहते हैं। अपने जीवन में इतने व्यस्त होते हैं कि आस-पड़ोस में क्या घटित हो रहा है किसी को जानने की रुचि ही नहीं रहती। आज लोग न तो दूसरे के जीवन में कोई रुचि रखते हैं, न वह चाहते कि कोई उनके जीवन में रुचि लें। इसी अजनबीपन और अकेलेपन के कारण आपसी संबंधों का क्षरण हो रहा है।

लेखिका ने शहर में पर्यावरण प्रदूषण व गंदगी को दिखाया है। ‘पार्क फेसिंग घर’ कहानी में दिखाया है कि महानगर में खुद का घर बनाना व जमीन खरीदना एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के लिए सपने देखने के बराबर है। अपनी आमदनी का तिनका-तिनका बचत करके वह अपने सपनों का घर बनवाता है। घर के आस-पास गंदगी को दिखाया है जिसमें चारुलता स्वयं ही आसपास की सफाई करती है। पड़ोस के लोग उसका मजाक बनाते हैं बार-बार मैदान गन्दा कर देते हैं, किन्तु वह सफाई करना बंद नहीं करती है। निम्न कथन के माध्यम से दिखाया है कि “छह हजार स्ववायर फीट का एक गंदला मैदान, जहाँ रखे निगम कंटेनर में लोग कूड़ा फेंकते। कुत्ते-कौव-सूअर खाने की तलाश में हरदम भटकते और चारू के घर के सामने तो स्थिति बद से बदतर थी। रुचि-सुरुचि दोनों ही दरवाजे के बाहर बैठने खड़े होने से भी कतराती है। ” उपर्युक्त सन्दर्भों के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि कई शहरों में पर्यावरण प्रदूषण चरम स्तर पर है। चारुलता एक पर्यावरण प्रेमी स्त्री है, वह अपने सपनों के घर के आसपास साफ-सुथरा रखना चाहती है एवं अपने छत में बचे हुए हिस्से पर पौधे लगाती है। अंततः उसका सपना साकार होता है।

लेखिका ने वर्तमान समाज की सच्चाई पर अपनी लेखनी चलाई है। लेखिका समाज स्थित कुरीतियों का जिक्र करती है जैसे, दहेज प्रथा। दहेज के कारण ‘योग्य वधु’ एवं ‘बूढ़ा पिता’ कहानी में विवाह होते-होते रुक गया। इंदिरा दांगी इन कथाओं में दहेज समस्या का चित्रण किया है। तथा उसे समाज के लिए घातक बताया है। ‘योग्य वधु’ कहानी में सुहानी एक पढ़ी-लिखी लड़की। उसने दर्जनों मेडल जीते हैं। उसके विवाह के लिए उसे लड़के वाले देखने आते हैं, किन्तु सुहानी से सब पूछताछ के बाद दहेज की बात चलने पर लड़के वालों की तरफ से रिश्ता टूट जाता है। इस कथन से यह स्पष्ट होता है “अरे जब आपकी औकात ही नहीं थी अच्छे घर में बेटी ब्याहने की तो हमें लड़की देखने ही क्यों बुलाया? बड़े धूर्त हैं आप ! आपने क्या सोचा कि हम आपकी लड़की की सूरत देखेंगे और ऐसे लट्ट हो जायेंगे कि बिना दहेज, हल्दी का सूखा टीका लगवाकर आपकी मौड़ी को ब्याह ले जायेंगे। अरे हमारे लड़के के लिए लोग पचास-पचास लाख लिए फिरें हैं और हम रिश्ता तय नहीं कर रहे।”

‘बूढ़ा पिता’ कहानी में सुदामा प्रसाद अपने पेंशन से परेशान रहता है। दूसरी तरफ जवान बेटी के विवाह की चिंता उसे सताती है। विवाह के लिए दहेज की मांग से परेशान सुदामा प्रसाद कहते हैं- “आज दोपहर ही उनका सन्देश आया है कि एक लाख रुपए का दहेज मांग रहे हैं तुम ही कहो सुमित्रा(पत्नी) मैं कहा से लाऊंगा एक लाख रुपए?” वह अपने पिता की बात दरवाजे की ओट से सुनती है जिससे दुखी होकर सुदामा प्रसाद की बेटी सरला अगले दिन पंखे में दुपट्टा बांधकर लटक जाती है। खुदखुशी कर लेती है। उपर्युक्त सन्दर्भों के आधार पर कहा जा सकता है कि दहेज प्रथा एक ऐसा सामाजिक अभिशाप है जो स्त्रियों के साथ होने वाले अपराधों को बढ़ावा देता है। दहेज प्रथा एक गंभीर सामाजिक बुराई है। जिससे महिलाओं की स्थिति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। यहाँ पर दहेज जैसी कुरीति के कारण बेटियाँ स्वयं ही अपने आपको खत्म कर लेती हैं या फिर शादी होने के बाद ससुराल में प्रताड़ित होती है। जहाँ अमीर व सम्भ्रांत परिवारों के लिए दहेज सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक है, जितना दहेज देंगे उतना ही समाज में सम्पन्न और प्रतिष्ठावान कहलायेंगे। समाज की यह धारणा है। वहीं मध्यवर्गीय व निम्नवर्गीय परिवारों के लिए यह एक अभिशाप है। वर्तमान में लड़कियों की श्रेष्ठता उनके गुणों से नहीं बल्कि दहेज में मिलने वाली ऊँची रकमों से की जाती है। जिसे समाप्त करने के लिए जागरूकता तथा आत्मचेतना आवश्यक है।

समाज में बलात्कार व अवैध मातृत्व की समस्या भी इंदिरा दांगी के कहानियों में देखने को मिलती है। ‘टैक्सी ड्राइवर की हत्या’ तथा ‘कम्बल’ कहानी में मुख्य रूप से इसका जिक्र किया गया है। ‘कम्बल’ कहानी में बलात्कार तथा अवैध मातृत्व की समस्या को दिखाया गया है। जिसमें कड़कड़ाती ठंड में एक पगली औरत चौराहे पर अपने नन्हें शिशु को छाती से चिपकाये पड़ी थी। किसी ने उसका बलात्कार कर, उसे उसी अवस्था में छोड़कर चला गया। जिसमें एक कांस्टेबल का कथन है कि “मरेगा तो मर जायेगा। अरे साहब, ऐसे बच्चों के जीने-मरने से किसे फर्क पड़ता है? माँ पगली है, बाप का कुछ अता-पता नहीं। पता नहीं कौन कमीना, अंधेरे-उजाले इसको ये पाप दे गया। ये बेचारी तो अपने बलात्कारी का नाम तक न जानती होगी। सीने से इस बच्चे को चिपकाये पूरा दिन इन्हीं सड़कों पर फिरती रहती है।” तथा ‘टैक्सी ड्राइवर की हत्या’ कहानी में भी समाज में हो रहे बलात्कार व बलात्कार के बाद उस

स्त्री के हत्या का जिक्र है जिसे इस कहानी में लेखिका ने दिखाया है। जो इस कथन से स्पष्ट होता है “पगली भिखारिन की हत्या बहुत ही निर्ममता से की गई थी लाश निर्वस्त्र थी किसी दरिन्दे ने अपनी वासना की आग बुझाकर बेचारी को मार डाला।” उपर्युक्त सन्दर्भों से यह स्पष्ट होता है कि आज हर क्षेत्र में चाहे वह उनका कार्य स्थल हो, या अपने ही परिवार, जान-पहचान वालों के हाथों स्त्रियाँ बलात्कार व यौन शोषण का शिकार हो रही हैं। समाज में ऐसी कई स्त्रियाँ हैं जिनके साथ यौन शोषण व बलात्कार होता है। कई स्त्रियाँ अपने साथ हुए शोषण के खिलाफ आवाज़ नहीं उठा पाती और जो आवाज़ उठाती भी हैं उन्हें जोर-जबरदस्ती करके डरा-धमका कर उनकी आवाज़ को बंद कर दिया जाता है। इस कहानी में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि जो बेघर, मानसिक रूप से कमजोर स्त्रियाँ हैं उनके भोलेपन का फायदा उठाकर दरिन्दे उनका शोषण करते हैं तथा कई घटनाओं में उनके साथ दुष्कर्म करके उनकी हत्या भी कर दी जाती है।

इंदिरा दांगी के कहानियों में राजनैतिक भ्रष्टाचार प्रमुख रूप से उभर कर आते हैं। ‘द हीरो’, ‘गुरुजी’, एवं ‘आरक्षण’, ‘बूढ़ा पिता’ कहानी में समाज में हो रहे भ्रष्टाचार को लेखिका ने दिखाने की कोशिश की है। उनकी कहानी ‘बूढ़ा पिता’ में पेंशन के लिए भटकते सुदामा प्रसाद की दशा का वर्णन किया गया है। लेखिका ने सरकारी कार्यालय में रिश्तखोरी को भी कहानी में दिखाया है। कार्यालय के बाबू द्वारा सुदामा प्रसाद को कहा गया यह कथन भ्रष्टाचार को स्पष्ट करता है “साला बूढ़ा हो गया है पर इतना भी नहीं जानता कि कोरी दरखास्तें देने से कुछ नहीं होता, उन पर वजन भी रखना पड़ता है। पेंशन के आर्डर यँ ही नहीं निकल जाते।” उपर्युक्त संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी कार्यालय में रिश्तखोरी का व्यापक क्षेत्र है। सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्त के कोई काम आगे नहीं बढ़ाया जाता है। हरिशंकर परसाई की कहानी ‘भोलाराम का जीव’ में भी लेखक ने सरकारी दफ्तरों के भ्रष्टाचार को दिखाया है। जिसमें 5 साल से रुकी पेंशन रिश्त (वजन न रख पाने) न दे पाने की वजह से फंसी है। भोलाराम ने दरखास्त दी थी किन्तु उस पर वजन नहीं रखा था। ‘बूढ़ा पिता’ कहानी में सुदामा प्रसाद सेवानिवृत्त था उसे न प्रोविडेंट फंड का रुपया मिला था न ही पेंशन। वह पेंशन के कारण कार्यालय के चक्कर लगाता रहा। इसे निम्न कथन से समझा जा सकता है - “दफ्तर के चक्कर काटना उन्होंने अब भी न छोड़ा। अलबत्ता अब वे हफ्ते में दो तीन बार उस ओर जाते। हाथ जोड़कर अपना याचना पत्र देते और थके-थके पैरों से लौट आते।” उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि भ्रष्टाचार के कारण सामान्य व्यक्ति को सरकारी कार्यालय में पेंशन के कारण दर-दर भटकना पड़ता है। रिश्तखोरी के कारण मानवीय संवेदनाओं का हास देखने को मिलता है। ‘द हीरो’ कहानी जनपद पंचायत भांडेर के माध्यमिक और प्राथमिक स्कूलों के मध्याह्न भोजन के बजट के हेर-फेर को लेकर है। नए अफसर स्कूल को जारी बजट राशि को घटाकर सत्तर प्रतिशत किए जाने की बात करते हैं। किन्तु गाँव के गरीब बच्चे इसी मध्याह्न भोजन के चलते जी रहे हैं। निम्न कथन से यह स्पष्ट होता है- “सर, इस इलाके के गाँव गरीब हैं। सालों से अकाल का डेरा रहा है; फिर बुन्देलखण्ड में उपजता ही क्या है!.. जब से स्कूल में दिन में खाना शुरू हुआ है, ऐसे कितने ही बच्चे जी गये हैं जो भूख से मर सकते थे।” समाज की स्थिति देखकर, भूख और गरीब बच्चों को देखकर, अंत में अफसर का मन परिवर्तित हो जाता है। ‘द हीरो’ कहानी में ग्रामीण परिवेश को महत्व दिया गया है। इस

कथन से इसका जिक्र होता है कि “शहरी लोग नहीं जानते, गाँव होता है एक कुटुंबनुमा रचना। तरक्की में भले देहात शहरों से पिछड़े हो पर सामाजिकता में वह शहरों से कहीं श्रेष्ठ हैं जहाँ सब एक-दूसरे की खबर रखते हैं अदब लिहाज निभाते हैं और शत्रुता में भी शैलीनता बरतते हैं।” उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण परिवेश के लोगों के मजबूत सामाजिक रिश्ते होते हैं, वे संकट के समय सहयोग की भावना रखते हैं।

इंदिरा दांगी की कहानियों में समाज का मध्यवर्गीय व्यक्ति केंद्र में है। इंदिरा दांगी ने शहरी मध्यम वर्ग का अधिक चित्रण किया है। इंदिरा दांगी की कहानी ‘एक नहीं तितली आती तो है’ में इसका जिक्र है “तुम्हें वो लहंगा बहुत पसंद था ?” और पत्नी ने जैसा सुना ही नहीं; सड़क पार कर चाटवाले ठेले की ओर चलते हुए उसके चेहरे पर नया रंग आ गया – छोटी तितली जैसी खुशी का रंग।” उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी बाजार के चकाचौंध को दिखाया गया है तथा शोरूम के सौन्दर्य का प्रदर्शन किया गया है। एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति कैसे अपनी इच्छाओं का दमन करता है, महंगाई के कारण उसकी खाहिश दब जाती है। मध्यवर्गीय व्यक्ति आकांक्षाओं, आर्थिक संघर्षों के बीच फंसा होता है। समकालीन कहानियाँ यद्यपि उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के चरित्रों को लेकर लिखी गयी हैं लेकिन वह मूलतः मध्यवर्गीय है। कहानीकार ने एक ओर मध्यवर्ग की हताशा और विवशता को उभारा है तो दूसरी ओर उनकी महत्वाकांक्षाओं का उल्लेख किया है। ‘सुंदर लड़की और भिखारी’ कहानी समाज में दिखावे की प्रवृत्ति का चित्रण लेखिका ने किया है। जिसमें एक भिखारी मंदिर की सीढ़ियों में बैठकर सबसे भीख मांगता है, किन्तु ठंड में रजाई खरीदने के लिए उसे कोई भी भीख नहीं देता है। लेकिन वही मंदिर में कुछ समय बाद कामायनी नाम की एक लड़की बेंच में आकर बैठ जाती है। जिससे वह वहाँ आकर्षण का केंद्र बन जाती है। कामायनी को प्रभावित करने के लिए आस-पास के दुकान के लोग एवं दर्शनार्थी उस भिखारी को भीख देने लगते हैं। लेखिका ने समाज में हो रहे नैतिक मूल्यों का क्षरण भी दिखाया है। ‘बाउजी की बहुत इज्जत है’ कहानी में दिखाया गया है कि टी.टी. द्वारा रिटायर्ड पुलिस इंस्पेक्टर ओमप्रकाश के साथ अभद्र व्यवहार करना, धक्का देना इत्यादि है। टी.टी. द्वारा ओमप्रकाश के साथ किया गया अशिष्ट व्यवहार “क्यों अपना बुढ़ापा खराब करने पर तुला है ? मेरी एक कलम से तुझे जेल हो जायेगी। चुप-चाप अपनी जगह बैठ बूढ़े कुत्ते !” एक बुजुर्ग के साथ अभद्रता व नैतिक मूल्य का पतन दिखाई देता है।

रोजगार के वजह से पलायन व युवकों में उत्पन्न मोहभंग आदि समस्याओं को लेखिका ने बखूबी अपनी रचनाओं में उल्लेखित किया है। समाज में बेरोजगारी चरम स्तर पर है। इसे ‘नवप्रभात’ कहानी में दिखाया है कि “प्रभात ने एम्. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। अब उसे नौकरी की तलाश थी; परन्तु नौकरियाँ क्या इतनी आसानी से प्राप्त हो जाती हैं? वह भी इस देश में जहाँ लाखों डिग्रीधारी बेरोजगार घूम रहे हैं।” उपर्युक्त सन्दर्भों से यह स्पष्ट होता है कि आज समाज में शिक्षित बेरोजगार की समस्या विद्यमान है। लेखिका दिखाती है कि डिग्री होने के बावजूद दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कारण युवा बेरोजगार हैं। एक ओर उच्च शिक्षा के लिए युवाओं को प्रोत्साहित किया जाता है दूसरी ओर नौकरियों की भर्ती जल्दी निकाली नहीं जाती। पढ़े-लिखे युवाओं के मन में कुंठा, हताशा, निराशा, मोहभंग,

भावनात्मक तनाव उत्पन्न होने लगते हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लेखक अपने देशकाल से प्रभावित होकर साहित्य का सृजन करता है। वर्तमान साहित्यकार इंदिरा दांगी के साहित्य में यथार्थ जीवन का चित्रण देखने को मिलता है। इंदिरा दांगी ने वर्तमान समाज में उत्पन्न समस्याओं को अपनी कहानियों में आकार प्रदान किया है, जो व्यक्ति के अस्तित्व और समाज के विकास के लिए सहायक है। लेखिका ने अपनी कहानियों में स्त्रीवादी दृष्टिकोण दिखाया ही है किन्तु साथ ही समाज के मुद्दों (शिक्षित बेरोजगारी, भ्रष्टाचार) को दिखाया है। लेखिका ने अपनी कहानियों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील दृष्टि अपनाई है। लेखिका ने नारी अस्मिता, यौन शोषण, बलात्कार, आदि विषयों पर आवाज उठाई है। वर्तमान समाज की सबसे बड़ी समस्या शिक्षित बेरोजगारी, आर्थिक समस्या, माध्यमवर्गीय जीवन की समस्या को दिखाया है। भ्रष्टाचार व प्रशासन में हो रहे रिश्तखोरी को अपनी कहानियों में दिखाया है। इन कहानियों में वर्णित समस्याएँ आने वाले पीढ़ी को संकेत करने का कार्य रही हैं जिससे एक बेहतर समाज का निर्माण संभव हो सके। लेखिका ने इन युगीन समस्याओं को अपनी कहानियों के केंद्र में रखकर न केवल यथार्थपरक साहित्य का सृजन किया है, बल्कि उनकी कृतियों में वर्तमान सामाजिक चेतना भी पूरी तरह प्रतिध्वनित होती है। इनकी कहानियाँ मानव जीवन में घटित घटनाओं और विषमताओं का प्रमाणिक व सजीव प्रकटीकरण करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. . शुक्ल, रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा प्रकाशन, वाराणसी, 1929, पृष्ठ सं. 01.
2. . मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2014, 64.
3. दांगी, इंदिरा, योग्य वधु (बारहसिंघा का भूत), शब्दसृष्टि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं. 122.
4. . दांगी, इंदिरा, बाउजी की बहुत इज्जत है (एक सौ पचास प्रेमिकाएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ सं. 76.
5. . दांगी, इंदिरा, पार्क फेसिंग घर, (एक सौ पचास प्रेमिकाएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ सं. 80.
6. . दांगी, इंदिरा योग्य वधु (बारहसिंघा का भूत), शब्दसृष्टि, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं. 125.
7. दांगी, इंदिरा, बूढ़ा पिता (बारहसिंघा का भूत), शब्दसृष्टि, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं. 19.
8. . दांगी, इंदिरा, कम्बल (एक सौ पचास प्रेमिकाएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ सं. 122.
9. . दांगी, इंदिरा, टैक्सी ड्राइवर की हत्या (बारहसिंघा का भूत), शब्द सृष्टि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं. 58.
10. दांगी, इंदिरा, बूढ़ा पिता (बारहसिंघा का भूत), शब्दसृष्टि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं. 16.
11. . वही, बूढ़ा पिता, पृष्ठ सं. 17.
12. . दांगी, इंदिरा, द हीरो (एक सौ पचास प्रेमिकाएँ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ सं. 22.
13. . वही, द हीरो, पृष्ठ सं. 30.
14. दांगी, इंदिरा, एक नहीं तितली आती तो है (एक सौ पचास प्रेमिकाएँ), पृष्ठ सं. 19.
15. दांगी, इंदिरा, एक सौ पचास प्रेमिकाएँ (बाऊ जी की बहुत इज्जत है), पृष्ठ सं. 77.
16. . दांगी, इंदिरा, नवप्रभात (बारहसिंघा का भूत), शब्दसृष्टि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं. 81.